"33"
pib.nic.in
mod.nic.in

पत्र सूचना कार्यालय (रक्षा विंग)
भारत सरकार
****
'हर काम देश के नाम'

नई दिल्लीः पौष 12, 1944
सोमवारः 01 जनवरी 2023

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने अपना 65वां स्थापना दिवस मनाया; नई दिल्ली में डीआरडीओ मुख्यालय में पूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम को पुष्पांजलि अर्पित की

डीआरडीओ के 65वें स्थापना दिवस के अवसर पर आज नई दिल्ली स्थित मुख्यालय में पूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम को उनकी अर्ध-प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई, जो प्रतिवर्ष एक जनवरी को मनाया जाता है। रक्षा विभाग अनुसंधान एवं विकास के सचिव और डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ समीर वी कामत ने डीआरडीओ के महानिदेशकों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ भारत के मिसाइल मैन की अर्ध-प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दो पुस्तकों का विमोचन भी शामिल था, जिसमें रक्षा प्रौद्योगिकियों पर लेख, वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली पर एक शब्दकोश, स्टोर मैनुअल और गाइडलाइन्स (एसएमजी -2023), द्विमासिक बुलेटिन इनसाइट और डीआरडीओ टेक्नोलोजी फोरसाइट का तीसरा वर्षगांठ अंक शामिल था। डीआरडीओ टेक्नोलोजी फोरसाइट , डीआरडीओ की वेबसाइट पर साझा की जाएगी ताकि उद्योग और शिक्षा जगत तदनुसार अपनी अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों की योजना बना सकें।

डीआरडीओ के अध्यक्ष ने डीआरडीओ के पूर्व वैज्ञानिक डॉ कमल नैन चोपड़ा द्वारा लिखित डीआरडीओ मोनोग्राफ 'इन्फ्रारेड सिग्नेचर्स, सेंसर्स एंड टेक्नोलॉजीज' का भी विमोचन किया। डीआरडीओ कैलेंडर 2023 भी जारी किया गया। इसके अलावा, रक्षा विभाग अनुसंधान एवं विकास के सचिव और डीआरडीओ के अध्यक्ष ने डीआरडीओ में सेवा के 25 साल पूरे करने वाले सभी कर्मचारियों को सम्मानित किया।

इस अवसर पर डॉ समीर वी कामत ने डीआरडीओ बिरादरी को अपने संबोधन में, 2022 में कई मील के पत्थर हासिल करने के लिए उन्हें रेखांकित किया, उनसे देश में रक्षा अनुसंधान एवं विकास पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करने और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'आत्मनिर्भर भारत' की परिकल्पना को साकार करने का प्रयास करने का आग्रह किया।

डीआरडीओ अध्यक्ष ने कहा कि डीआरडीओ द्वारा विकसित कई प्रणालियों को वितरित, शामिल किया गया है या उपयोगकर्ताओं को सौंप दिया गया है। इनमें भारतीय वायुसेना के लिए मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल की तीन फायरिंग यूनिट, शक्ति ईडब्ल्यू सिस्टम, जलयानों के लिए इंफ्रारेड सिग्नेचर सप्रेशन सिस्टम, एसयू-30 लड़ाकू विमानों के लिए ब्रेक पैराशूट, टी-90 टैंक के लिए लेजर रेंज फाइंडर के साथ कमांडर थर्मल इमेजिंग साइट, ध्वनि ऑटोमेटेड सोनार ट्रेनर, चार प्रकार के रेडिएशन कंटैमिनेशन मॉनिटरिंग सिस्टम, मिग-29 एयरक्रू हेलमेट और प्रेशर ब्रीदिंग ऑक्सीजन मास्क आदि शामिल हैं।

डॉ. कामत ने कहा कि रक्षा प्रापण बोर्ड और रक्षा अधिग्रहण परिषद ने डीआरडीओ द्वारा विकसित कई प्रणालियों को शामिल करने के लिए आवश्यकता की स्वीकृति (एओएन) भी प्रदान की है। कुछ उल्लेखनीय प्रणालियों में शामिल हैं: सारंग ईएसएम सिस्टम, लाइट टैंक, टैक्टिकल एडवांस रेंज ऑग्मेंटेशन (टीएआरए) किट, लॉन्ग रेंज गाइडेड बम (एलआरजीबी)-गौरव, नेवल एंटी-शिप मिसाइल-मीडियम रेंज (एनएएसएम-एमआर), एनजीएमवी के लिए एयर सर्विलांस रडार, लो लेवल ट्रांसपोर्टेबल रडार (एलएलटीआर) -अश्विनी, नई पीढ़ी के एंटी-रेडिएशन मिसाइल (एनजीआरएम), प्रलय, पिनाका के लिए गाइडेड एक्सटेंडेड रेंज रॉकेट एम्युनिशन, सेल्फ प्रोपेल्ड माइन ब्यूरियर, इन्फैंट्री कॉम्बैट व्हीकल-कमांड, एंटी-पर्सनल फ्रेगमेंटेशन माइन 'यूएलके', इन्फैंट्री फ्लोटिंग फुट ब्रिज, पुल बिछाने वाले टैंक (बीएलटी) टी -72 और एसीएडीए।

डीआरडीओ अध्यक्ष ने कहा कि आकाश हथियार प्रणाली के सेना संस्करण के अथोरिटी होल्डिंग सील्ड पर्टिकूलर्स (एएचएसपी) को मिसाइल सिस्टम गुणवत्ता आश्वासन एजेंसी को सौंप दिया गया है। कई प्रमुख प्रणालियां या तो पूरी हो चुकी हैं या उपयोगकर्ता मूल्यांकन के अंतिम चरण में हैं। इनमें एडवांस्ड टोड आर्टिलरी गन सिस्टम (एटीएजीएस), तीसरी पीढ़ी के हेलीकॉप्टर से लॉन्च एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल 'हेलिना', एनएएमआईएस (ट्रैक्ड) और 'नाग' एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल, क्विक रिएक्शन सरफेस टू एयर मिसाइल, मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल, मैकेनिकल माइन लेयर (सेल्फ प्रोपेल्ड), 84 एमएम एंटी-थर्मल/एंटी-लेजर स्मोक ग्रेनेड, एचईपीएफ और आरएचई (एन्हांस्ड) रॉकेट एम्युनिशन फॉर पिनाका एमआरएलएस, 125 एमएम एफएसएपीडीएस, वायु रक्षा अग्नि नियंत्रण रडार 'अतुल्य', पर्वतों के लिए हथियार का पता लगाने वाला रडार, वी/यूएचएफ मैनपैक सॉफ्टवेयर डिफाइन्ड रेडियो, पी-16 हेवी ड्रॉप सिस्टम, पोर्टेबल डाइवर डिटेक्शन सोनार सिस्टम, उन्नत हल्के वजन के टारपीडो, और गगनयान मिशन के लिए समुद्री जल शुद्धिकरण किट शामिल हैं।

डॉ. कामत ने कहा कि कई प्रणालियों का विकासात्मक परीक्षण भी चल रहा है। इनमें समुद्रिका कार्यक्रम के तहत नौसेना प्लेटफार्मों के लिए इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर सिस्टम, फेस-2 बैलिस्टिक मिसाइल डिफेंस इंटरसेप्टर एडी-1 मिसाइल, एसयू-30 विमान से ब्रह्मोस का विस्तारित रेंज संस्करण, वेरी शॉर्ट रेंज एयर डिफेंस सिस्टम, नेवल एंटी-शिप मिसाइल-शॉर्ट रेंज, अग्नि प्राइम, वर्टिकल लॉन्च-शॉर्ट रेंज सरफेस टू एयर मिसाइल (वीएल-एसआरएसएएम), आकाश-न्यू जनरेशन, मैन-पोर्टेबल एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल (एमपीएटीजीएम), एन्हांस्ड रेंज पिनाका रॉकेट सिस्टम , हाई स्पीड एक्सपेंडेबल एरियल टारगेट 'अभ्यास', स्मॉल टर्बो फैन इंजन, कावेरी ड्राई इंजन डब्ल्यूएपी-सीबीआरएन, शत्रुघाट और ईडब्ल्यू सिस्टम फॉर प्लेन्स एंड डेजर्ट एक्टिव इलेक्ट्रॉनिक ली स्कैन्ड ऐरे रडार 'उत्तम', एडवांस्ड लाइट टोड एरे सोनार आदि शामिल हैं।

डीआरडीओ अध्यक्ष ने कहा कि उम्मीद है कि आने वाले साल में परीक्षणाधीन अधिकांश प्रणालियां उपयोगकर्ताओं को सौंप दी जाएंगी। उन्होंने संक्षेप में कहा कि 2022 में 26,000 करोड़ रुपये के पांच सीसीएस कार्यक्रम और 11,000 करोड़ रुपये की 55 अन्य परियोजनाओं को मंजूरी दी गई। पहले स्वीकृत 32 परियोजनाएं सफलतापूर्वक पूरी की गईं। कुछ अन्य फ्लैगशिप कार्यक्रम जैसे एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एएमसीए) भी सीसीएस द्वारा अनुमोदन के लिए विचाराधीन हैं।

डॉ. कामत ने बताया कि पिछले एक साल में डीआरडीओ ने 145 प्रौद्योगिकी हस्तांतरण (टीओटी) पर हस्ताक्षर किए हैं। आईपी संरक्षण के लिए, 160 पेटेंट दायर किए गए थे और 2022 के दौरान 100 दिए गए हैं। प्रौद्योगिकी विकास निधि (टीडीएफ) योजना के तहत धनराशि सीमा को 10 करोड़ रुपये प्रति परियोजना से बढ़ाकर 50 करोड़ रुपये कर दिया गया। यह डीआरडीओ को अधिक जटिल प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए उद्योग का समर्थन करने में सक्षम करेगा। उन्होंने कहा कि नौसेना नवाचार एवं स्वदेशीकरण संगठन और टीडीएफ के बीच उन्नत नौसेना प्रौद्योगिकियों पर संयुक्त

रूप से काम करने के लिए समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए गए। इसके अलावा, उन्होंने उल्लेख किया कि डेयर टू ड्रीम प्रतियोगिता का चौथा संस्करण रक्षा मंत्री द्वारा लॉन्च किया गया है। उन्होंने बताया कि डीआरडीओ ने अब कुल 15 डीआरडीओ-उद्योग-शिक्षा उत्कृष्टता केंद्र (डीआईए-सीओई) स्थापित किए हैं। वर्तमान में, 1,183 करोड़ रुपये की लागत से शिक्षा जगत के साथ 867 परियोजनाएं चल रही हैं।

एबीबी/डीएस